

मुग़ल रामायण के पात्रों की दृश्य-भावनात्मक प्रस्तुति

Pradeep Saini¹, Dr. Farha Deeba²

Research Scholar, College of Fine Arts, Teerthanker Mahaveer University¹, Moradabad
Associate Professor, College of Fine Arts, Teerthanker Mahaveer University², Moradabad

सारांश (Abstract)

मुग़ल काल भारतीय चित्रकला के इतिहास में वह युग था जब सांस्कृतिक, धार्मिक और कलात्मक विचारों का अद्भुत समन्वय हुआ। इसी युग में फ़ारसी भाषा में अनूदित रामायण ने भारतीय और इस्लामी कलात्मक दृष्टियों को एक सूत्र में पिरोया। प्रस्तुत शोध-पत्र में मुग़ल रामायण के चित्रों में अंकित पात्रों की दृश्य एवं भावनात्मक प्रस्तुति का अध्ययन किया गया है। इन चित्रों में राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान तथा रावण जैसे पात्रों को जिस भाव-भंगिमा, रंग-संयोजन, दृष्टि और मुद्रा के माध्यम से व्यक्त किया गया है, वह न केवल कथा का सार प्रकट करता है बल्कि कलाकारों की सांस्कृतिक संवेदना और कल्पनाशक्ति को भी दर्शाता है। यह अध्ययन इस बात की खोज करता है कि किस प्रकार मुग़ल कलाकारों ने भारतीय आस्था और फ़ारसी सौंदर्यशास्त्र को मिलाकर पात्रों के अंतर्मन के भावों को दृश्य रूप दिया।

मुख्य शब्द (Keywords)

मुग़ल रामायण, मुग़ल चित्रकला, भाव-प्रस्तुति, पात्र-चित्रण, अकबर काल, सांस्कृतिक समन्वय, दृश्य-भाषा

उद्देश्य (Objectives)

1. मुग़ल कालीन रामायण चित्रण में प्रमुख पात्रों की दृश्य एवं भावनात्मक प्रस्तुति का विश्लेषण करना।
2. यह समझना कि मुग़ल कलाकारों ने भारतीय धार्मिक कथा के पात्रों को इस्लामी सौंदर्य दृष्टि के साथ कैसे जोड़ा।
3. विभिन्न चित्रों में प्रयुक्त रंग, रेखा, मुद्रा, और दृष्टि के माध्यम से पात्रों की भावनात्मक स्थिति को पहचानना।
4. रामायण के चित्रों के माध्यम से अकबरकालीन धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक संवाद को उजागर करना।
5. मुग़ल चित्रकारों की कलात्मक शैली के माध्यम से पात्रों के मनोभावों की व्याख्या करना।



परिचय

रामायण की सोलहवीं शताब्दी की मुगल पांडुलिपि, जिसे अक्सर मुगल रामायण के रूप में संदर्भित किया जाता है, हिंदू महाकाव्य कथा और मुगल कलात्मक परंपरा का एक उल्लेखनीय मिश्रण है। मुगल सम्राट अकबर द्वारा कमीशन की गई यह पांडुलिपि, सांस्कृतिक और कलात्मक समन्वय का एक प्रमाण है जो उनके शासनकाल की विशेषता थी। यह न केवल रामायण की कहानी को चित्रित करती है, बल्कि विविध सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं के लिए मुगल दरबार की प्रशंसा को भी दर्शाती है।

ऐतिहासिक संदर्भ

अकबर के शासन (1556-1605) के तहत मुगल साम्राज्य महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और कलात्मक उपलब्धियों का काल था। धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक एकीकरण की अपनी नीति के लिए जाने-जाने वाले अकबर ने महत्वपूर्ण हिंदू ग्रंथों का फारसी में अनुवाद और चित्रण करने के लिए कई परियोजनाएँ शुरू कीं। इनमें महाभारत (रज्मनामा के रूप में अनुवादित) और रामायण शामिल थे। इन ग्रंथों का अनुवाद और चित्रण अकबर के अपने साम्राज्य में एकीकृत सांस्कृतिक और बौद्धिक वातावरण बनाने के व्यापक प्रयास का हिस्सा थे।

रामायण परियोजना

मुगल रामायण परियोजना 1580 के आसपास शुरू हुई और इसमें विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्वानों और कलाकारों की एक समूह शामिल था। इस पाठ का संस्कृत से फारसी में अनुवाद विद्वानों के एक समूह द्वारा किया गया था, जिसमें हिंदू और मुस्लिम दोनों ही बुद्धिजीवी शामिल थे। चित्र मुगल कलात्मक कार्यशाला के कलाकारों द्वारा बनाए गए थे, जो फारसी लघु चित्रकला परंपरा में कुशल थे, लेकिन उन्होंने भारतीय कला के तत्वों को भी शामिल किया था। (Deeba 2012)

कलात्मक शैली और तकनीक

मुग़ल रामायण में चित्रों की विशेषता उनके जटिल विवरण, जीवंत रंग और फारसी और भारतीय कलात्मक शैलियों का मिश्रण है। कलाकारों ने महाकाव्य के दृश्यों को जीवंत बनाने के लिए बढ़िया ब्रशवर्क, विस्तृत चेहरे के भाव और विस्तृत पृष्ठभूमि जैसी तकनीकों का इस्तेमाल किया। सोने और अन्य समृद्ध रंगों का उपयोग चित्रों में समृद्धि और भव्यता की भावना जोड़ता है। (HajianfardवZekrgoo 2023)

रचना और खाका (लेआउट)

चित्रों की रचना कथा के माध्यम से दर्शकों की नज़र का मार्गदर्शन करने के लिए सावधानीपूर्वक संरचित है। प्रत्येक चित्रण को एक सीमा द्वारा तैयार किया गया है, जिसे अक्सर पुष्प या ज्यामितीय पैटर्न से सजाया जाता है। केंद्रीय आकृतियाँ आमतौर पर बड़ी और अधिक विस्तृत होती हैं, जो दृश्य की मुख्य क्रिया पर ध्यान आकर्षित करती हैं। पृष्ठभूमि जटिल विवरणों से भरी हुई है, जैसे कि पेड़, जानवर और वास्तुशिल्प तत्व, जो संदर्भ प्रदान करते हैं और कहानी को बढ़ाते हैं।

पात्रों का चित्रण

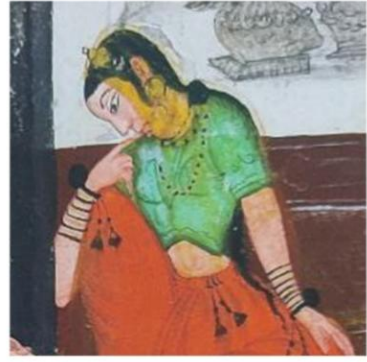
मुग़ल रामायण के पात्रों को विस्तार और व्यक्तित्व पर बहुत ध्यान देते हुए चित्रित किया गया है। महाकाव्य के नायक राम को अक्सर शांत और महान भाव के साथ दिखाया जाता है, जो उनके दिव्य स्वभाव और सदाचारी चरित्र को दर्शाता है। उनकी पत्नी सीता को अनुग्रह और सुंदरता के साथ चित्रित किया गया है, जो स्त्री सद्गुण के आदर्श को दर्शाती है। राक्षस राजा रावण को कई सिर और एक भयंकर भाव के साथ चित्रित किया गया है, जो उसकी शक्ति और द्वेष को दर्शाता है।



दशरथ

“छवि में, दशरथ को सूर्य जैसे रूपांकनों वाला विस्तृत मुकुट पहने हुए और नारंगी रंग की विस्तृत पोशाक पहने हुए दिखाया गया है। यह पोशाक राजसीपन का संकेत देती है, जो रामायण में राजा के रूप में उनकी भूमिका के अनुरूप है। उनकी मुद्रा और पोशाक उनके शाही दर्जे और अधिकार पर जोर देती है”

कैकेयी



“मुगल लघु चित्रकला में कैकेयी को एक विचारशील भाव के साथ चित्रित किया गया है, उनकी उंगली उनके होठों पर है, जो चिंतन या योजना बनाने का संकेत देती है। वह पारंपरिक पोशाक और आभूषणों से सजी हुई हैं, जो उनकी शाही स्थिति को दर्शाता है। यह शैली उनके शासनकाल के दौरान भारतीय कला पर मुगल प्रभाव को दर्शाती है।”

जामवंत



“मुगल लघु चित्रकला में जामवंत को मानव शरीर वाले काले भालू के रूप में दर्शाया गया है। उन्हें राजसी पोशाक पहनाई गई है, जिसमें मुकुट और आभूषण शामिल हैं, जो रामायण में उनके महत्व और पूजनीय स्थिति को दर्शाते हैं। उनका चित्रण उनकी बुद्धि और शक्ति को उजागर करता है।”

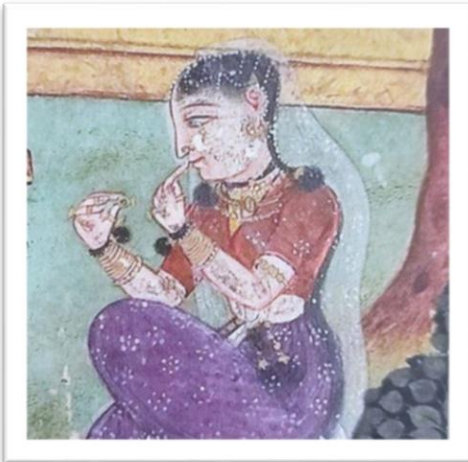
राम

“मुग़ल लघु चित्रकला में, राम को नीले रंग के साथ दर्शाया गया है, जो उनके दिव्य स्वभाव



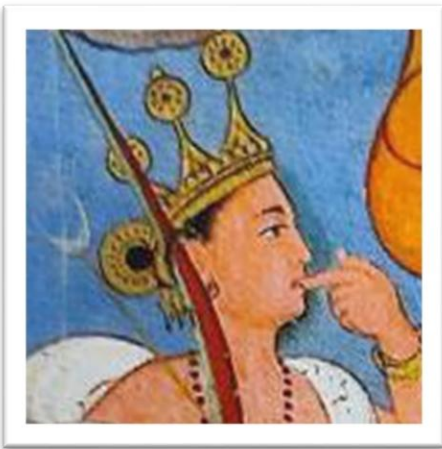
का प्रतीक है। उन्होंने एक शाही मुकुट और पारंपरिक आभूषण पहने हैं, जो उनके राजसी दर्जे को दर्शाता है। उनकी पोशाक में हरे रंग का सैश और लाल रंग का निचला वस्त्र शामिल है, जो प्राचीन भारतीय राजघराने की खासियत है। उनके हाथ में धनुष उनके योद्धा रूप को दर्शाता है।”

सीता



“मुग़ल लघु चित्रकला में सीता को फर्श पर सुंदर ढंग से बैठे हुए दिखाया गया है, जो जटिल आभूषणों और पारंपरिक पोशाक से सुसज्जित है। उनका आसन सुंदर है, उनका एक हाथ उनके चेहरे के पास है, जो संतुलन और श्रद्धा को दर्शाता है। जीवंत रंग और विस्तृत कलात्मकता उन्हें एक केंद्रीय, पूजनीय आकृति के रूप में उजागर करती है।”

लक्ष्मण

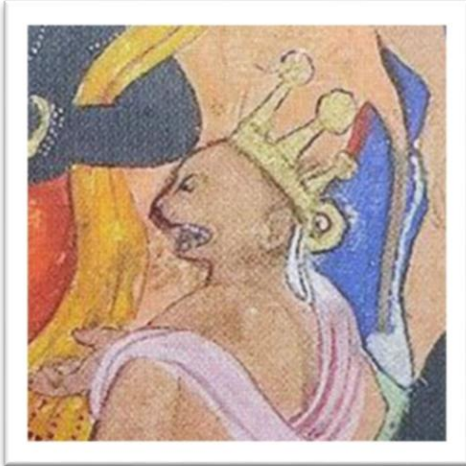


“मुग़ल लघु चित्रकला में लक्ष्मण को एक योद्धा के रूप में दिखाया गया है, जो धनुष और बाण पकड़े हुए युद्ध के लिए तैयार है। उनकी पोशाक राजसी है, जिसमें जटिल सिर की पोशाक और विस्तृत आभूषण शामिल हैं। उनकी केंद्रित और दृढ़ अभिव्यक्ति रामायण में उनके योद्धा की स्थिति और अपने भाई, राम की रक्षा के लिए समर्पण को उजागर करती है।”



हनुमान

“मुग़ल लघु चित्रकला में हनुमान को एक मुकुटधारी व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है, जिसका चेहरा बंदर जैसा है और शरीर मजबूत, मांसल मानव जैसा है। उन्हें अपने बाएं हाथ से एक पहाड़ उठाते हुए दिखाया गया है, जो उनकी अपार शक्ति और भक्ति का प्रतीक है। उनकी पोशाक में सुनहरे पैटर्न वाले लाल शॉर्ट्स शामिल हैं, जो शाही महत्व को दर्शाते हैं।”



सुग्रीव

“मुग़ल लघु चित्रकला में सुग्रीव को एक उग्र और दृढ़ अभिव्यक्ति, तीखे नुकीले दांतों और बड़ी आँखों के साथ दर्शाया गया है। वह एक राजसी मुकुट और आभूषण पहनता है, जो उसके अधिकार और युद्ध के लिए तत्परता का प्रतीक है। यह चित्रण रामायण में एक शक्तिशाली योद्धा राजा के रूप में उसकी भूमिका को दर्शाता है।”



ब्रह्मा

“मुग़ल लघु चित्रकला में ब्रह्मा को चार सिर के साथ दर्शाया गया है, जिनमें से प्रत्येक अलग-अलग दिशा में मुख किए हुए हैं। वह कमल के फूल पर बैठे हैं, जो पवित्रता और दिव्यता का प्रतीक है। ब्रह्मा की चार भुजाएँ हैं, जिनमें से प्रत्येक में एक अलग वस्तु है, और उन्हें आभूषण और मुकुट पहनाया गया है, जो उनकी दिव्य स्थिति को दर्शाता है।”



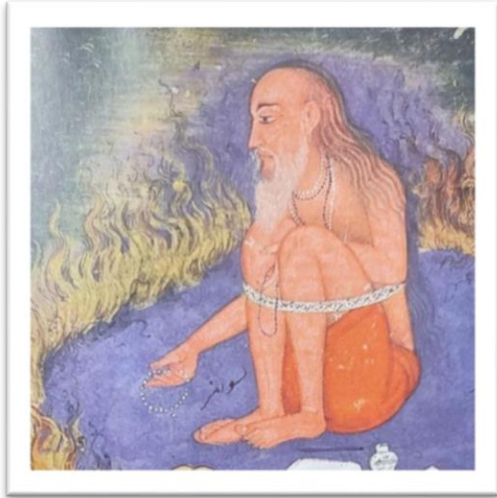
विष्णु

“मुग़ल लघु चित्रकला में, विष्णु को चार भुजाओं, नीले रंग और मुकुट से सुसज्जित दिखाया गया है। उनके पास शंख और चक्र है, जो उनके साथ जुड़े पारंपरिक प्रतीक हैं। उनकी मुद्रा से गति या नृत्य का आभास होता है, और उनकी पोशाक विस्तृत और अलंकृत है”



शिव

“मुग़ल लघु चित्रकला में शिव को बाघ की खाल पर बैठे हुए दिखाया गया है, और उनका चेहरा शांत है। उनकी चार भुजाएँ हैं, एक हाथ आशीर्वाद देने की मुद्रा में है, और दूसरा हाथ माला जैसा प्रतीत होता है। उनके बाल एक तपस्वी की चोटी की तरह सजे हुए हैं और उनके माथे पर अर्धचंद्र है।”



विश्वामित्र

“मुग़ल लघु चित्रकला में विश्वामित्र को एक शांत ऋषि के रूप में दर्शाया गया है, जो एक शांत प्राकृतिक वातावरण में एक नदी के किनारे बैठे हैं। उनके लंबे बाल हैं और वे सरल, सुरुचिपूर्ण पोशाक पहनते हैं, जो उनकी तपस्वी जीवनशैली को दर्शाता है। जीवंत रंग और विस्तृत ब्रशवर्क रामायण में उनके महत्व पर जोर देते हैं।”



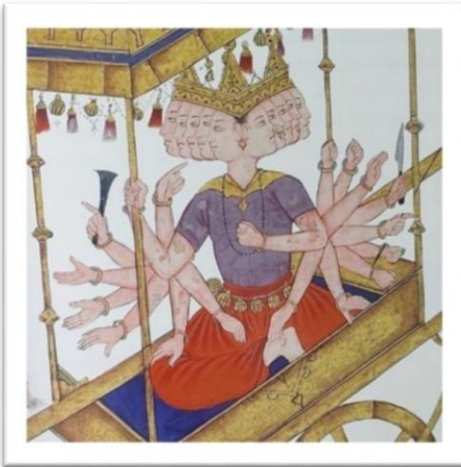
ऋष्यशृंग

मुगल लघु चित्रकला में, ऋष्यशृंग को एक शांत भाव के साथ, एक प्राकृतिक वातावरण में बैठे हुए दर्शाया गया है। उनके माथे पर एक प्रमुख सींग है, जो उनके तपस्वी स्वभाव और हिरण से संबंध का प्रतीक है। उनकी साधारण पोशाक और आस-पास का वातावरण एक आश्रम और भक्ति के जीवन का संकेत देता है।



ताड़का

“मुगल लघु चित्रकला में ताड़का को एक भयंकर राक्षसी के रूप में दर्शाया गया है जिसके नुकीले दांत और हरी आंखें हैं। उसका रंग नारंगी है और उस पर गहरे रंग के धब्बे हैं और वह आभूषणों से सजी हुई है। उसकी भयावह अभिव्यक्ति रामायण में उसके दुष्ट स्वभाव को उजागर करती है।”



रावण

“मुगल लघु चित्रकला में रावण को कई सिर और भुजाओं के साथ दर्शाया गया है, जो उसकी अपार शक्ति और क्षमताओं का प्रतीक है। प्रत्येक सिर पर मुकुट है, और भुजाओं पर विभिन्न प्रतीकात्मक वस्तुएँ हैं, जो रामायण में एक राजा और योद्धा के रूप में उसके दुर्जेय स्वभाव को दर्शाती हैं।”

विभीषण



“मुगल लघु चित्रकला में विभीषण को कई भुजाओं के साथ दर्शाया गया है, जो उनके दिव्य स्वभाव को दर्शाता है। वह राजसी पोशाक और आभूषणों से सुसज्जित है, जो उसकी शाही स्थिति को दर्शाता है। उसकी मुद्रा से पता चलता है कि वह किसी प्रवचन में व्यस्त है, जो रामायण में एक बुद्धिमान सलाहकार के रूप में उसकी भूमिका से मेल खाता है।“

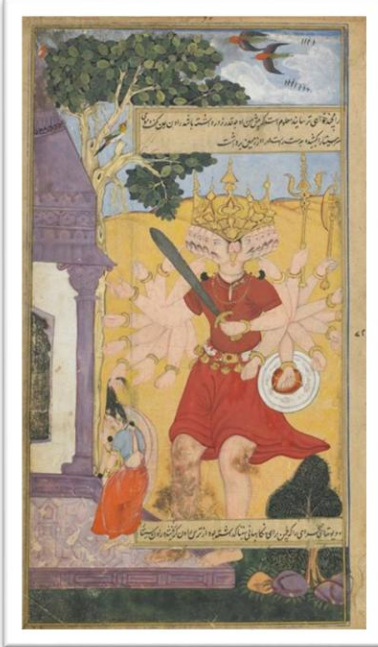
प्रमुख दृश्य और चित्रण

राम का वनवास



रामायण में सबसे मार्मिक दृश्यों में से एक राम का वनवास है। मुगल रामायण में इस दृश्य का चित्रण अयोध्या छोड़ते समय राम, सीता और लक्ष्मण के बीच भावनात्मक विदाई को दर्शाता है। कलाकारों ने पात्रों के चेहरों पर दुख और त्याग को दर्शाया है, साथ ही हरे-भरे जंगल की सेटिंग को भी दर्शाया है जो वनवास के दौरान उनका घर होगा।(Beach 2010)

सीता का अपहरण



रावण द्वारा सीता का अपहरण महाकाव्य में एक और नाटकीय क्षण है। मुगल रामायण में, इस दृश्य को गतिशील क्रिया और विशद विवरणों के साथ चित्रित किया गया है। रावण को अपने रथ पर सवार दिखाया गया है, जो सीता को उठा रहा है और वह निराशा में हाथ बढ़ा रही है। पृष्ठभूमि में पेड़ और जानवर भरे हुए हैं, जो आंदोलन और तत्परता की भावना पैदा करते हैं। (Beach 2010)

रावण के साथ युद्ध



राम और रावण के बीच चरमोत्कर्ष युद्ध को बहुत तीव्रता और नाटकीयता के साथ दर्शाया गया है। कलाकारों ने युद्ध की क्रूरता को व्यक्त करने के लिए बोल्ड रंगों और गतिशील रचनाओं का उपयोग किया है। राम को अपने धनुष और बाण के साथ दिखाया गया है, जो रावण पर निशाना साध रहे हैं, जिसे कई सिर और भुजाओं के साथ, विभिन्न हथियारों का इस्तेमाल करते हुए दर्शाया गया है। पृष्ठभूमि सैनिकों और रथों से भरी हुई है, जो अराजकता और संघर्ष की भावना को बढ़ाती है। (Beach 2010)

सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व

मुगल रामायण न केवल एक कलात्मक उपलब्धि है, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक एकीकरण का प्रतीक भी है। इस परियोजना को शुरू करके, अकबर ने हिंदू और मुस्लिम परंपराओं के बीच की खाई को पाटने और एकता और आपसी सम्मान की भावना को बढ़ावा देने की कोशिश की। चित्र इस समन्वय को दर्शाते हैं, जो एक अनूठी दृश्य भाषा बनाने के लिए फ़ारसी और भारतीय कला के तत्वों को मिलाते हैं। (Rice 2017)

कलाकार

लछमन, साहिबदीन, मुकुंद, मेघा, गुजराती, प्रीनिलव, गुजराती, तारा, कलारि, तुलस, नंद, ग्वियालोर्फ, बरवाल, खुर्द, भगवान, हुसैन, नगगन्ति, गुलाम, 'अली, मांडू, चित्रभुज, धर्मदास, नरिदा, चित्रा, बतावोन्न, मांडू खुर्द, सूर्या, गुजरात, जगिलवन, भूरा, धनवान, मणि, देवल, गुजराती, मचावा, चेला, मिस्कीना, शंकर, महेशा, भवानी, कलां, चित्रा, मुनि, मचावा, कलां, केशव, खोस्ट, नामा, बरनियल, रामदास, मांडू, कलां सांवता केशव गुजराती कर्ण नन्हा खेमकरण, बनवाल, कलां, भवानी, पारस, तुलसी, खुर्द, करमचंद, नारायण, श्रावरिया, मांडू फिरंगी, मेघज्यू, गुजराती, नंद तुलसी, कलारि, इब्राहिम,

विरासत और प्रभाव

मुग़ल रामायण का भारतीय कला और संस्कृति पर स्थायी प्रभाव पड़ा है। इसने हिंदू महाकाव्यों के चित्रण के लिए एक मिसाल कायम की और कलाकारों की अगली पीढ़ियों को प्रभावित किया। यह पांडुलिपि एक मूल्यवान ऐतिहासिक दस्तावेज भी है, जो अकबर के दरबार के सांस्कृतिक और बौद्धिक परिवेश के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

कार्यविधि (Methodology)

इस शोध में गुणात्मक (Qualitative) शोध-पद्धति अपनाई गई है। अध्ययन हेतु रज़मनामा के चयनित चित्रों का दृश्य-विश्लेषण (Visual Analysis) किया गया है, जिनका स्रोत मुख्यतः भारतीय संग्रहालयों, अभिलेखागारों तथा प्रसिद्ध कला इतिहासकारों जैसे मिलो बीच, ब. न. गोस्वामी, ए. सी. दास, और ऑड्री डुश्के की पुस्तकों से लिया गया है। प्रत्येक चित्र का विश्लेषण उसकी संरचना, रंग, रेखा, मुद्रा, पृष्ठभूमि और भाव-अभिव्यक्ति के आधार पर किया गया है।

शोध में साहित्यिक स्रोतों (रामायण), ऐतिहासिक दस्तावेजों और दृश्य साक्ष्यों को रखा गया है ताकि पात्रों की दृश्य-भावनात्मक प्रस्तुति को संपूर्णता से समझा जा सके।

निष्कर्ष

परिणाम में, निम्नलिखित बिंदु हमारी टिप्पणियों को सारांशित करते हैं। परिणाम में, निम्नलिखित बिंदु हमारी टिप्पणियों को सारांशित करते हैं। सबसे पहले, मुग़ल कला गर्म वातावरण से प्रभावित थी, और लोगों की त्वचा भूरी थी। इसके अलावा, चित्रों में जो रंग इस्तेमाल किए गए थे वे गर्म रंग थे, जैसे लाल और नारंगी, और यह उस गर्म वातावरण में



परिलक्षित होता है जिसमें मुगल रहते थे। पर्यावरण के अलावा, मुगल चमकीले रंग पसंद करने वाले लोग हैं, इसलिए इसने भारतीय चित्रकला को प्रभावित किया जो चमकीले रंगों से भरी हुई थी।

रामायण की सोलहवीं शताब्दी की मुगल पांडुलिपि कला और साहित्य की उत्कृष्ट कृति है। यह हिंदू और मुगल परंपराओं के संगम का प्रतिनिधित्व करती है और सांस्कृतिक और धार्मिक बहुलता को दर्शाती है।

ग्रंथ सूची:

Beach, Milo Cleveland. 2010. *The Adventures of Rama*. Ahmedabad India, Ocean Township, NJ: Mapin Publishing Pvt.Ltd.

Deeba, Farhaa. 2012. *Mughal Chitrakala*. Dillī.

Hajianfard, Ramin, वAmir H. Zekrgoo. 2023. "Mughal Miniature Painting: An Analytical Study of the Akbar's Ramayana." *KUPAS SENI: Jurnal Seni Dan Pendidikan Seni* 11(2):53–66. doi:10.37134/kupasseni.vol11.2.6.2023.

Rice, Yael. 2017. "Workshop as Network: A Case Study from Mughal South Asia." *Artl@s Bulletin*.
https://www.academia.edu/35293437/Workshop_as_Network_A_Case_Study_from_Mughal_South_Asia.